डेनिम डंगरी का बढ़ा क्रेज

युवतियों की पसंद ट्रेंडी और कम्फर्टेबल फैशन

इंदौर रक्षाबंधन सीजन के बीच शहर के बाजारों में महिलाओं और युवतियों के बीच डेनिम डंगरी का क्रेज तेजी से बढ़ रहा है. खासकर कॉलेज जाने वाली छात्राएं और युवा वर्ग इसे पसंद कर रहे हैं. स्टाइलिश लुक के साथ आरामदायक होने के कारण इसकी मांग लगातार बढ़ रही है.

राजवाड़ा स्थित परी फैशन्स के संचालक सुनील ने बताया कि उनकी दुकान पर कई तरह के महिला परिधान उपलब्ध हैं, लेकिन इस बार लड़कियों की मांग को देखते हुए लाइट ब्लू वॉश डंगरी, बैगी/वाइड लेग डंगरी, रिप्ड डेनिम डंगरी, ब्लैक डेनिम डंगरी और डंगरी ड्रेस (पिनाफोर स्टाइल) जैसे नए डिज़ाइन का विशेष कलेक्शन लाया गया है. उन्होंने बताया कि इन डिज़ाइनों की अच्छी बिक्री हो रही है. इनकी कीमत भी ज्यादा नहीं है, इसलिए कम बजट में आसानी से मिल रही हैं और ग्राहक इन्हें पसंद कर रहे हैं. कई युवतियां मोबाइल में अपनी पसंद की तस्वीर दिखाकर उसी डिज़ाइन की डंगरी की मांग कर रही हैं. साथ ही उसके साथ मैचिंग टी-शर्ट, क्रॉप टॉप और हुडी भी खरीद रही हैं.

पहनने में होती है आरामदायक

सुनील के अनुसार, डंगरी पिछले काफी समय से बाजार में चलन में है, लेकिन अब इसके नए-नए डिज़ाइन, रंग और पैटर्न आने लगे हैं, जिससे इसकी लोकप्रियता और बढ़ गई है. खरीदारी करने आई युवतियों का कहना है कि डेनिम डंगरी यात्रा के दौरान पहनने में काफी आरामदायक रहती है. इसके आकर्षक रंग, आधुनिक डिज़ाइन और स्टाइलिश लुक उन्हें बेहद पसंद आ रहे हैं. उनका कहना है कि आज की युवा पीढ़ी अपनी पसंद के साथ-साथ आरामदायक कपड़े पहनना चाहती है. यही वजह है कि डेनिम डंगरी आज के समय में युवतियों की पसंदीदा फैशन ट्रेंड बन गई है.

11 साल के सुमेध ने रचा इतिहास, वर्ल्ड अर्निस चैंपियनशिप में भारत को दिलाया सिल्वर मेडल

मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर के लिए गर्व का क्षण तब आया, जब शहर के महज 11 वर्षीय खिलाड़ी सुमेध श्रीवास्तव ने वर्ल्ड अर्निस चैंपियनशिप-2026 में शानदार प्रदर्शन करते हुए भारत के लिए सिल्वर मेडल जीत लिया. उनकी इस उपलब्धि ने न केवल इंदौर, बल्कि पूरे मध्य प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया है.

यह अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता 1 से 4 अगस्त 2026 तक नई दिल्ली में आयोजित हुई. पहली बार भारत में आयोजित इस प्रतिष्ठित चैंपियनशिप में दुनिया के कई देशों के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया. भारत का प्रतिनिधित्व करने वाले खिलाड़ियों में इंदौर के सुमेध श्रीवास्तव भी शामिल थे. उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए रजत पदक अपने नाम किया. सुमेध के पिता के अनुसार, बेटे की खेलों में रुचि और फुर्ती को देखते हुए उन्होंने महज साढ़े तीन साल की उम्र से ही उसे कराटे का प्रशिक्षण दिलाना शुरू कर दिया था. लगातार अभ्यास और मेहनत के दम पर सुमेध आज कराटे में ब्लैक बेल्ट बन चुके हैं। इसके अलावा वे राज्य और राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में 40 से अधिक पदक जीत चुके हैं. सुमेध के कोच सईद आलम ने बताया कि अर्निस फिलीपींस की पारंपरिक मार्शल आर्ट है. इसमें लकड़ी की छड़ी (स्टिक), चाकू जैसे हथियारों के उपयोग की तकनीक के साथ-साथ बिना हथियार के आत्मरक्षा के तरीके भी सिखाए जाते हैं. यह खेल स्पीड, स्टैमिना, संतुलन और तकनीकी दक्षता पर आधारित होता है. उन्होंने कहा कि सुमेध ने कम उम्र में इन सभी गुणों को विकसित कर अंतरराष्ट्रीय मंच पर अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया है.

कोच के अनुसार, भारत में अर्निस खेल तेजी से लोकप्रिय हो रहा है और राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर नियमित प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा रहा है. सुमेध की यह उपलब्धि देश के युवा खिलाड़ियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेगी. उनकी सफलता पर परिवार, प्रशिक्षकों और खेल प्रेमियों में खुशी का माहौल है। खेल जगत ने उन्हें बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की है.

नए प्रवेशित विद्यार्थियों को नेतृत्व कौशल की दी जानकारी

इंदौर. रेनेसां विश्वविद्यालय में बीबीए के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन सत्र एवं एम्बेसडर प्रोग्राम- डे-2 का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का उद्देश्य नए विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें विश्वविद्यालय के शैक्षणिक वातावरण, नियमों, गतिविधियों और नेतृत्व विकास से परिचित कराना था.

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, विभिन्न क्लबों, सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, अनुशासन, व्यक्तित्व विकास तथा नेतृत्व कौशल से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गईं. साथ ही उन्हें विश्वविद्यालय के संसाधनों और कैंपस जीवन के बारे में विस्तार से अवगत कराया गया. विश्वविद्यालय प्रबंधन ने विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें नई शैक्षणिक यात्रा के लिए शुभकामनाएँ दीं तथा कहा कि एम्बेसडर प्रोग्राम के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व क्षमता, टीमवर्क, संवाद कौशल और आत्मविश्वास का विकास किया जाएगा. कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक सहभागिता की और विभिन्न गतिविधियों में हिस्सा लिया. यह सात दिवसीय एम्बेसडर प्रोग्राम नए विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय के वातावरण से जोड़ने और उन्हें भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है.

आईआईटी इंदौर में अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन 7 और 8 अगस्त को

इंदौर. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आई.आई.टी) इंदौर के सिमरोल परिसर स्थित नालंदा ऑडिटोरियम में 7 एवं 8 अगस्त को पर्यावरण अनुसंधान एवं सतत इंजीनियरिंग में नवाचार 'एनराइज़ 2026' विषय पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया जाएगा.

सम्मेलन में भारत सहित विभिन्न देशों के वैज्ञानिक, शोधकर्ता, शिक्षाविद, उद्योग विशेषज्ञ एवं रिसर्च स्कॉलर्स भाग लेंगे। कार्यक्रम के दौरान पर्यावरण संरक्षण, सतत इंजीनियरिंग, ग्रीन टेक्नोलॉजी, अपशिष्ट प्रबंधन, जल शोधन, जलवायु परिवर्तन, सर्कुलर इकोनॉमी तथा पर्यावरणीय नवाचार जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञ अपने शोधपत्र प्रस्तुत करेंगे और विचार साझा करेंगे. आयोजकों के अनुसार इस सम्मेलन का उद्देश्य पर्यावरण से जुड़ी नई तकनीकों, अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना तथा शोधकर्ताओं, शिक्षाविदों और उद्योग जगत के बीच सहयोग को मजबूत करना है. सम्मेलन के माध्यम से सतत विकास से जुड़े प्रभावी समाधान और नई शोध संभावनाओं पर भी चर्चा की जाएगी. यह सम्मेलन 7 और 8 अगस्त को आईआईटी इंदौर के सिमरोल परिसर में आयोजित होगा, जिसमें देश-विदेश के विशेषज्ञों की सहभागिता रहेगी।

स्वच्छता के साथ स्वच्छ जल हो सर्वोच्च प्राथमिकता

इंदौर. आज देश के सबसे स्वच्छ शहरों में अपनी धाक तथा पहचान बना चुका है. यह उपलब्धि नागरिकों, प्रशासन और जनभागीदारी के संयुक्त प्रयासों का परिणाम है. लेकिन अब समय आ गया है कि स्वच्छता के साथ-साथ स्वच्छ जल को भी शहर की सर्वोच्च प्राथमिकता बनाया जाए क्योंकि किसी भी शहर का वास्तविक विकास तभी संभव है, जब उसके नागरिकों को पर्याप्त मात्रा में सुरक्षित और स्वच्छ पेयजल उपलब्ध हो.

जल जीवन का आधार है. यदि पानी स्वच्छ नहीं होगा, तो अनेक बीमारियाँ फैलेंगी, स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ेगा और लोगों का जीवन स्तर प्रभावित होगा. तेजी से बढ़ती आबादी, भूजल का अत्यधिक दोहन, जल स्रोतों का प्रदूषण और वर्षा जल का पर्याप्त संरक्षण न होना भविष्य में जल संकट को और गंभीर बना सकता है. इसलिए अभी से प्रभावी कदम उठाना आवश्यक है. इंदौर को जल संरक्षण का आदर्श शहर बनाने के लिए वर्षा जल संचयन (रेन वाटर हार्वेस्टिंग) को प्रत्येक घर, स्कूल, संस्था और भवन में बढ़ावा देना चाहिए. शहर के तालाबों, नदियों और अन्य जल स्रोतों की नियमित सफाई तथा संरक्षण सुनिश्चित करना भी आवश्यक है. सीवेज और औद्योगिक अपशिष्ट को बिना शोधन के जल स्रोतों में जाने से रोकना चाहिए. साथ ही, घरों और उद्योगों में पानी के विवेकपूर्ण उपयोग तथा पुनर्चक्रण (रीसाइक्लिंग) को प्रोत्साहित करना चाहिए.

नवभारत
कैसा हो सपनों का इंदौर

रेणु जैन
विभिन्न विषयों की लेखिका

जल संरक्षण केवल सरकार की जिम्मेदारी नहीं है. प्रत्येक नागरिक का भी यह कर्तव्य है कि वह पानी की एक-एक बूंद का सम्मान करे. नलों को खुला न छोड़ना, रिसाव को तुरंत ठीक कराना, अनावश्यक जल व्यय से बचना और वर्षा जल संग्रहण जैसे छोटे-छोटे प्रयास मिलकर बड़े परिवर्तन ला सकते हैं. यदि समाज और प्रशासन मिलकर कार्य करें, तो इंदौर आने वाली पीढ़ियों के लिए भी जल-सुरक्षित शहर बन सकता है. जिस प्रकार इंदौर ने स्वच्छता के क्षेत्र में पूरे देश के लिए प्रेरणा प्रस्तुत की है, उसी प्रकार वह स्वच्छ जल और जल संरक्षण के क्षेत्र में भी नई मिसाल कायम कर सकता है. स्वच्छ जल केवल एक सुविधा नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक का मूल अधिकार और साझा जिम्मेदारी है. यदि आज हम जल का संरक्षण करेंगे और उसे प्रदूषित होने से बचाएंगे, तो आने वाले वर्षों में इंदौर न केवल स्वच्छता बल्कि जल प्रबंधन और हरित विकास के क्षेत्र में भी विश्व स्तर पर अपनी अलग पहचान स्थापित करेगा.

गीतों की महफिल में गूंजे किशोर कुमार के अमर नगमे

इंदौर. ओंकार बालाजी इवेंट्स एंड म्यूजिकल ग्रुप द्वारा बुधवार को प्रीतमलाल दुआ सभागृह, रीगल चौराहा में संगीतमय कार्यक्रम कोई लौटा दे मेरे बीते हुए दिन का आयोजन किया गया. कार्यक्रम में स्वर सम्राट किशोर कुमार के सदाबहार गीतों की शानदार प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को पुरानी यादों में डुबो दिया. सभागार में उपस्थित संगीत प्रेमियों ने हर प्रस्तुति पर तालियों की गड़गड़ाहट से कलाकारों का उत्साहवर्धन किया.

कार्यक्रम में हेमंतकुमार खड़ीकर के निर्देशन में शहर के कई प्रसिद्ध गायकों ने एक से बढ़कर एक गीत प्रस्तुत किए. हेमंत खड़ीकर ने दिल्लगी ने दी हवा, दिलीप नजान ने मेरे महबूब कयामत होगी, विवेक जोशी ने छू लेने दो नाजुक होठों को, फोकल जिज्ञासा ने काली रात दिन हंस दूर थे, शशि चौहान ने तुमने जो रंगीले कैसा जादू किया, बबीता पाण्डेय ने प्यार दीवाना होता है, प्रवीण कुलकर्णी ने कोई हमदम न रहा, मंजू डांगी ने तुम मुझे यूं भुला न पाओगे, अनिल चंद्रवंशी ने चूड़ी नहीं ये मेरा दिल है, जागृति बांकोड़े ने वादा कर ले साजना, साधना पटेल ने ओ मेरे दिल के चैन तथा मोहनलाल पटेल ने ये जीवन है जैसे लोकप्रिय गीतों की प्रस्तुति देकर खूब वाहवाही बटोरी.

करीब 20 से अधिक सदाबहार गीतों से सजी इस संगीत संध्या में सभी कलाकारों ने अपनी सुरीली आवाज़ से श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया. कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन हेमंतकुमार खड़ीकर ने किया. देर शाम तक चले इस आयोजन में संगीत प्रेमियों ने पुराने दौर के गीतों का भरपूर आनंद लिया और कलाकारों का तालियों से स्वागत किया.

रोमांचक मुकाबलों के बाद विजेता टीमें अगले दौर में

इंदौर. लेट सुनीता सिंह मेमोरियल इंटर स्कूल बास्केटबॉल चैंपियनशिप के दूसरे दिन की विजेता टीमों ने अगले दौर में जगह बनाई. बालक वर्ग में सेंट विंसेंट स्कूल ने लिटिल फ्लावर को 12-11, आईपीएस एकेडमी ने चोइथराम स्कूल को 18-6, प्रूडेंशियल किड्स स्कूल ने सिक्का स्कूल को 14-6, अग्रवाल पब्लिक स्कूल ने बिट्स पब्लिक स्कूल को 15-13, भवन्स प्रॉमिनेंट ने किड्स कॉलेज को 17-3, सेंट नॉर्बर्ट स्कूल ने एकआईना स्कूल को 25-4, डीपीएस ने श्री वैष्णव एकेडमी को 21-14, सेंट पॉल स्कूल ने कैटालिस्ट वर्ल्ड स्कूल को 35-6, एमराल्ड हाइट्स 'बी' ने नेशनल पब्लिक स्कूल को 25-6, न्यू इरा पब्लिक स्कूल ने एसडीपीएस को 22-2 और शिशुकुंज इंटरनेशनल (नॉर्थ कैंपस) ने ईवा वर्ल्ड स्कूल को 16-14 से हराकर दूसरे दौर में जगह बनाई. बालिका वर्ग में डीपीएस ने ईवा वर्ल्ड स्कूल को 46-4, ओमनी स्कूल ने प्रूडेंशियल किड्स स्कूल को 12-4, एनडीपीएस ने एलजी एकेडमी को 16-2, क्वींस कॉलेज ने कैटालिस्ट वर्ल्ड स्कूल को 17-2, एकआईना स्कूल ने मेडिकल स्कूल को 17-5, भवन्स प्रॉमिनेंट ने एमजीएम स्कूल को 11-10 और सेंट मैरी स्कूल ने पाकीज़ा स्कूल को 32-6 से हराकर अगले दौर में प्रवेश किया है.

एलआईजी के मूंग के भजिए : 45 वर्षों से कायम है स्वाद की पहचान

इंदौर का नाम आते ही सबसे पहले जिस चीज़ की याद आती है, वह है यहां का लाजवाब खान-पान. यह शहर केवल अपने स्वादिष्ट व्यंजनों के लिए ही नहीं, बल्कि उन लोगों के लिए भी जाना जाता है जिन्होंने वर्षों से अपने स्वाद और गुणवत्ता को बरकरार रखा है. इंदौर की इसी समृद्ध खाद्य परंपरा का एक अहम नाम है एलआईजी के प्रसिद्ध मूंग के भजिए, जिनका स्वाद पिछले 45 वर्षों से लोगों की जुबान पर आज भी उसी तरह कायम है.

करीब साढ़े चार दशक पहले दो भाइयों जितेन्द्र सिंह कुशवाह और महेशचंद्र कुशवाह ने एक छोटे से प्रयास के रूप में इस सफर की शुरुआत की थी. उस समय शायद उन्होंने भी नहीं सोचा होगा कि उनके हाथों का स्वाद एक दिन इंदौर की पहचान बन जाएगा. समय बदला, शहर बदला, लोगों की पसंद बदली, लेकिन एलआईजी के मूंग के भजियों का स्वाद आज भी वैसा ही बना हुआ है, जैसा वर्षों पहले था. दुकान के संचालक जितेन्द्र सिंह कुशवाह बताते हैं कि शुरुआत से ही उनका उद्देश्य केवल अच्छा और शुद्ध भोजन परोसना रहा है. यही कारण है कि आज भी कई परिवार पीढ़ियों से उनके ग्राहक बने हुए हैं. उनका कहना है कि ग्राहकों का विश्वास और प्रेम ही उनकी सबसे बड़ी पूंजी है, जिसे वे हर दिन अपने स्वाद और गुणवत्ता से बनाए रखने का प्रयास करते हैं.

एलआईजी के मूंग के भजिए केवल एक नाश्ता नहीं, बल्कि इंदौर की उस खाद्य संस्कृति का हिस्सा हैं, जहां स्वाद के साथ विश्वास भी परोसा जाता है। 45 वर्षों का यह सफर इस बात का प्रमाण है कि यदि गुणवत्ता, मेहनत और ग्राहकों के प्रति समर्पण बना रहे, तो समय भी उस पहचान को फीका नहीं कर सकता. आज भी शाम होते ही दुकान पर लगने वाली ग्राहकों की भीड़ इस बात का प्रमाण है कि इंदौर में स्वाद की परंपरा आज भी जीवित है और एलआईजी के मूंग के भजिए उस परंपरा के सबसे स्वादिष्ट अध्यायों में से एक हैं.

क्या कहते हैं ग्राहक

इस स्वाद की लोकप्रियता का अंदाजा ग्राहकों की बातों से भी लगाया जा सकता है. नियमित ग्राहक दिनेश शर्मा बताते हैं कि वे पिछले 40 वर्षों से यहां के भजिए खा रहे हैं. उनके अनुसार, इतने लंबे समय में बहुत कुछ बदल गया, लेकिन इन भजियों का स्वाद आज भी वैसा ही है जैसा उन्होंने पहली बार चखा था. यही निरंतरता इस दुकान की सबसे बड़ी पहचान है.

वहीं कैलाश श्रीवास कहते हैं कि वे विशेष रूप से लगभग आठ किलोमीटर की दूरी तय करके यहां केवल मूंग के भजिए खाने आते हैं. उनके मुताबिक, इस स्वाद का कोई विकल्प नहीं है और यही वजह है कि वे वर्षों से यहां आते रहे हैं.

एक नजर में 21 वीं सानंद नाट्य स्पर्धा में श्री अहिल्या नाट्य मंडल की बेहतरीन प्रस्तुति

मैडम : टूटते विश्वास और जागती चेतना का सशक्त रंग-संवाद

इंदौर. 21 वीं सानंद नाट्य स्पर्धा के तीसरे दिन बुधवार को इंदौर की सबसे पुरानी संस्था श्री अहिल्या नाट्य मंडल ने सामाजिक संदेश के साथ राजनीतिक विमर्श खड़ा करता नाटक मैडम का मंचन किया. नाटक की लेखिका सारिका ढेरंगे हैं. जबकि दिग्दर्शक का दायित्व संभाला है महान रंगकर्मी इतिहासकार स्वर्गीय गणेश मतकर के पोते चिन्मय सुनील मतकर ने.

राजनीति जब सिद्धांतों से अधिक सत्ता का खेल बन जाती है, तब सबसे पहले आहत होता है आम नागरिक का विश्वास. मैडम दरअसल, इसी टूटते विश्वास, सामाजिक विघटन और मानवीय संवेदनाओं के क्षरण को केंद्र में रखकर रचा गया एक प्रभावशाली नाटक है. यह किसी व्यक्ति विशेष की कहानी नहीं, बल्कि उस दौर का रंग-दस्तावेज है, जिसमें विचारधाराएं बदलना आसान हो गया है, किंतु विश्वास का पुनर्निर्माण सबसे कठिन कार्य बन चुका है. मैडम अंततः यह प्रश्न दर्शकों के सामने छोड़ जाती है कि लोकतंत्र केवल चुनावों से जीवित रहता है या फिर जनता के विश्वास, नैतिकता और सत्य के प्रति प्रतिबद्धता से. यही प्रश्न इस नाटक को समकालीन रंगमंच की एक सार्थक, प्रासंगिक और लंबे समय तक स्मृति में बनी रहने वाली प्रस्तुति बना देता है. निर्देशक चिन्मय सुनील मतकर ने नाटक की वैचारिक गंभीरता को मंच पर पूरी संवेदनशीलता के साथ रूपांतरित किया है. कहीं भी अनावश्यक नाटकीयता का सहारा नहीं लिया गया, जिससे प्रस्तुति का प्रभाव और अधिक विश्वसनीय बनकर उभरता है.

कलाकार

भूषण दीक्षित, तुषार धर्माधिकारी, आनंद कामले, रूही गंधे-नाईक, देवेन्द्र खैरीकर, यश पारखी, पंकज कुलकर्णी, विपीन मतकर, दुर्वाकुर द्रविड, रूपाली रूद्र-दुबे, यतीश मतकर, गजानन खोंडे, गौतम बुळे, डॉ. पंकज उपाध्याय, सुजीत कुळकर्णी, संजय कुळकर्णी, सुंदर राजन द्रविड.

कथासार...

नाटक का केंद्रीय पात्र राम शितोले केवल एक किसान पुत्र या सामाजिक कार्यकर्ता नहीं, बल्कि उस युवा पीढ़ी का प्रतिनिधि है जो व्यवस्था से प्रश्न पूछने का साहस रखती है. उसके भीतर पिता की आत्महत्या का दर्द है, किसानों की व्यथा है और राजनीति से परिवर्तन की अपेक्षा भी. जब उसका आदर्श नेता अवसरवाद का रास्ता चुनता है, तब उसका आक्रोश केवल एक व्यक्ति के विरुद्ध नहीं, बल्कि उस राजनीतिक संस्कृति के विरुद्ध खड़ा होता है, जिसने जनविश्वास को सबसे सस्ता संसाधन बना दिया है. नाटक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह आरोप-प्रत्यारोप के स्तर पर नहीं ठहरता. राम और मीनाक्षी के बीच होने वाले संवाद धीरे-धीरे सत्ता और समाज के बीच छिपे अनेक सच उद्घाटित करते हैं. एक ओर व्यवस्था से मोहभंग का दर्द है, तो दूसरी ओर सत्ता के भीतर पलते नैतिक द्वंद्व.. समकालीन राजनीति की विसंगतियों पर तीखे प्रश्न उठाने के बावजूद नाटक कहीं भी उपदेशात्मक नहीं बनता.

आत्मकल्याण में मनुष्य जीवन की सार्थकता

इंदौर। केशरी वाटिका स्थित चातुर्मास परिसर में आयोजित धर्मसभा में आचार्य विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी ने कहा कि मन, वचन और काया से होने वाले शुभ-अशुभ भाव ही कर्मबंधन का कारण बनते हैं. प्रवचन जैसे पवित्र स्थल पर भी असावधानी, विशेषकर मोबाइल पर बातचीत, अंतराय कर्म का कारण बनती है. उन्होंने आत्मचिंतन, सरल जीवन, वैराग्य तथा मोक्षमार्ग की ओर अग्रसर होने का संदेश देते हुए बताया कि मनुष्य जीवन अत्यंत दुर्लभ है, इसे आत्मकल्याण में लगाना ही जीवन की सार्थकता है. आचार्य विद्वदरत्न विजयजी धर्मसभा में कहा कि परमात्मा ने जो स्वयं प्राप्त किया, वही जगत को बताया. उन्होंने मनुष्य जीवन एवं जिनशासन की दुर्लभता पर प्रकाश डालते हुए अहंकार का त्याग, प्रभु वाणी को आत्मसात करने और संसार में रहते हुए भी कमल के समान निर्लिप्त जीवन जीने की प्रेरणा दी. संतों का समागम करोड़ों पापों का क्षय कराने वाला होता है. गुरु के प्रति श्रद्धा और अहोभाव ही आध्यात्मिक उन्नति का आधार है. उन्होंने कहा कि इन्दौर का वर्तमान चातुर्मास पूरे संघ के सहयोग से अत्यंत वैभवशाली एवं धर्ममय वातावरण में संचालित हो रहा है तथा पुण्य सम्राट की परंपरा निरंतर फल-फूल रही है.